B.A Part I
Paper IInd

अल्पविकसित देशों पर केन्ज के सिद्धान्त की व्यवहार्यता :-
(Applicability of keyne's Theory on Underdeveloped Countries)

1. प्रस्तावना
(Introduction)

केन्ज का सिद्धान्त प्रत्येक सामाजार्थिक व्यवस्था पर नहीं लागू होता। यह केवल उन्नत प्रजातंत्रात्मक पूंजीवादी अर्थव्यवस्थाओं पर ही लागू होता है। जैसाकि शूम्पीटर ने लिखा है, "व्यावहारिक केन्ज़वाद ऐसा नया बीज है जिसे विदेशी धरती में नही रोपित किया जा सकता; वहाँ यह मुरझा जाता है. और मुरझाने से पहले जहरीला बन जाता है। परन्तु यदि इसे इंग्लैंड की धरती में छोड़ा जाए; तो यह नया बीज बहुत स्वस्थ रहता है और फल तथा छाया दोनों ही प्रदान करने का आश्वासन देता है। यह बात केन्ज द्वारा दी गई नसीहत के प्रत्येक अंश के सम्बंन्ध में सत्य है।"

दूसरी ओर के.एन. राज का यह मत है कि "केन्ज़ीय सिद्धान्त को इसलिए त्याग देना कि यह अल्पविकसित देशों पर बिलकुल लागू नहीं होता, वास्तव में बच्चे को स्नान-जल के साथ ही फेंक देना है।"

- अल्पविकसित देशों के सम्बन्ध में केन्ज़वादी अर्थशास्त्र की व्यवहार्यता का अध्ययन करने से पूर्व यह आवश्यक है कि अल्पविकसित अर्थव्यवस्थाओं में प्रवर्तमान परिस्थितियों की तुलना में केन्ज़वादी अर्थशास्त्र की धारणाओं का विश्लेषण कर लिया जाए।

2. केन्ज़वादी मान्यताएं तथा अल्पविकसित देश
(keynesian assumptions and underdeveloped countries)

केन्ज़वादी अर्थशास्त्र निम्नलिखित मान्यताओं पर आधारित है, जो अल्पविकसित देशों के सम्बन्ध में उनकी व्यवहार्यता को सीमित करती हैं:

1) केन्ज़वादी अर्थशास्त्र चक्रीय बेरोजगारी की मान्यता पर आधारित है
(keynesian Economics is based on Assumption of Cyclical Unemployment) - केन्ज़वादी सिद्धान्त उस चक्रीय बेरोजगारी के अस्तित्व

Scanned by CamScanner

पर आधारित है जो मंदी के दौरान होती है। यह प्रभावी मांग की न्यूनता से उत्पन्न होती है। प्रभावी मांग के स्तर में वृद्धि करके बेरोजगारी को दूर किया जा सकता है। परन्तु विकसित अर्थव्यवस्था की अपेक्षा अल्पविकसित देशों में बेरोजगारी की प्रकृति बिलकुल भिन्न ही होती है। इस प्रकार की अर्थव्यवस्थाओं में बेरोजगारी चक्रीय नहीं बल्कि चिरकालिक (chronic) होती है। यह प्रभावी मांग के अभाव के कारण नहीं बल्कि पूंजी-साधनों की न्यूनता का परिणाम होती है। चिरकालिक बेरोजगारी के अतिरिक्त अल्पविकसित देश छिपी बेरोजगारी (disguised unemployment) से भी ग्रस्त रहते हैं। केन्ज़ का अनैच्छिक (involuntary) बेरोजगारी दूर करने तथा आर्थिक अस्थिरता की समस्या से मतलब था। इसलिए छिपी बेरोजगारी तथा उसके समाधान पर केन्ज़ ने विचार नहीं किया। चिरकालिक तथा छिपी बेरोजगारी का इलाज है। आर्थिक विकास, जिस पर केन्ज़ ने कोई ध्यान नहीं दिया। इस प्रकार चक्रिय बेरोजगारी तथा आर्थिक अस्थिरता के सम्बन्ध में केन्ज़ की धारणाएं अल्पविकसित अर्थव्यवस्था में नहीं टिक पातीं।

iii) केन्ज़ का अर्थशास्त्र अल्पकालीन विश्लेषण (Keynes's Economics is a Short Period Analysis) - "केन्जवादी अल्पकाल सम्बन्धी विश्लेषण है जिसमें केन्ज़ वर्तमान कुशलता तथा उपलब्ध श्रम की मात्रा, उपलब्ध उपस्कर (equipment) की वर्तमान मात्रा तथा स्वरूप, वर्तमान तकनीक, प्रतियोगिता की कोटि, उपभोक्ता की रुचियां तथा स्वभाव, श्रम की विभिन्न गहनताएं एवं देख-रेख तथा संगठन क्रियाओं की अनुपयोगिता और सामाजिक ढाँचा, इन सबको दिया हुआ मान लेता है।" पर, विकास अर्थशास्त्र दीर्घकालीन सम्बन्धी विश्लेषण है जिसमें उन सबका मूल साधनों में कालपर्यन्त में परिवर्तन हो जाता है जिन्हे केन्ज़ दिया दिया हुआ मान लेता है।

iii) केन्ज़वादी अर्थशास्त्र बंद अर्थव्यवस्था की मान्यता पर आधारित है (Keynesian Economics is based on the Assumption of a closed Economy) - परन्तु अल्पविकसित देश बन्द अर्थव्यवस्थाएं नहीं हैं वे तो खुली

Scanned by CamScanner

अर्थव्यवस्थाएं होती हैं, जहां उनका विकास करने में विदेशी व्यापार महत्त्वपूर्ण कार्य करता है। इस प्रकार की अर्थव्यवस्थाएं प्राथमिक रूप से कृषि तथा औद्योगिक कच्चे माल के निर्यात तथा पूंजीगत वस्तुओं के आयात पर निर्भर करती हैं। अतः अल्पविकसित देशों मे इस सम्बन्ध में केन्ज़वादी अर्थशास्त्र की कोई संगति नहीं हैं।

iv) श्रम तथा अन्य पूरक साधनों की अति पूर्ति की मान्यता पर आधारित (Based on the Assumption of Excess Supply of Labour and Complementary Factors)- केन्ज़वादी अर्थशास्त्र की धारणा है कि अर्थव्यवस्था में श्रम तथा अन्य पूरक साधनों का अधिक्य रहता है। इस विश्लेषण का सम्बन्ध मंदी की अर्थव्यवस्था से है; "जहां उद्योग, मशीनें, प्रबन्धकर्ता तथा श्रमिक एवं उपभोग- आदतें, सबके सब केवल इस प्रतीक्षा में रहते हैं कि अस्थायी रूप से निलंबित अपने कार्य तथा कार्यभाग को संभाल लें।" परन्तु अल्पविकसित अर्थव्यवस्थाओं में आर्थिक क्रियाएं अस्थायी तौर से निलंबित नहीं होती। वहां आर्थिक क्रियाएं स्थैतिक होती हैं। पूंजी, कुशलताओं, साधन पूर्तियों तथा आर्थिक उपरि पूंजी का अत्यन्त दुःखद अभाव होता है।

v) यह इस मान्यता पर आधारित है कि श्रम तथा पूंजी की बेकारी एक साथ होती। (This is based on the Assumption that Labour and Capital are Simultaneously Unemployed)- उपर्युक्त मान्यता से यह परिणाम भी निकाला जा सकता है कि केन्ज़वादी विश्लेषण के अनुसार, श्रम तथा पूंजी एक ही साथ बेकार होते हैं। जब श्रम बेरोज़गार होता है, तो पूंजी तथा उपस्कर का भी पूरा उपयोग नहीं हो पाता, अथवा उनमें अतिरिक्त क्षमता विद्यमान रहती है। परन्तु अल्पविकसित देशों में ऐसा नहीं होता वहाँ जब श्रम बेरोजगार होता है, तो पूंजी के अनुपयुक्त रहने का प्रश्न ही नहीं उत्पन्न होता क्योंकि पूंजी तथा उपस्कर की अत्यन्त कमी रहती

Scanned by CamScanner